

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

24-अप्रैल-2015 13:41 IST

राष्ट्रीय पंचायती राज दिवस पर प्रधानमंत्री के वक्तव्य का मूल पाठ

मंत्रिपरिषद के मेरे साथी, देश के अलग-अलग भागों से आए हुए पंचायत राज व्यवस्था के सभी प्रेरक महानुभाव,

जिन राज्यों को आज मुझे सम्मानित करने का सौभाग्य मिला है उन सभी राज्यों को मैं हृदय से बधाई देता हूँ। आज जिला परिषदों को भी और ग्राम पंचायतों का भी सम्मान होने वाला है। उन सबको भी मैं हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ। पंचायत राज दिवस पर मैं देशभर में पंचायत राज व्यवस्था से जुड़े हुए सक्रिय सभी महानुभावों को आज शुभकामनाएं देता हूँ।

महात्मा गांधी हमेशा कहते थे कि भारत गांवों में बसता है। उन गांवों के विकास की तरफ हम कैसे आगे बढ़े दूर-सुदूर छोटे-छोटे गांवों के भी अब सपने बहुत बड़े हैं। और मुझे विश्वास है कि आप सब के नेतृत्व में गांव की चहुं दिशा में प्रगति होगी। मैं नहीं मानता हूँ कि अब.. जैसे अभी हमारे चौधरी साहब बता रहे थे कि पहले से तीन गुना बजट होने वाला है आपका और तुरंत तालियां बज गई। कभी-कभी मुझे लगता है कि हम जो पंचायत में चुन करके आए हैं, कभी सोचा है कि हम 5 साल के कार्यकाल में हम हमारे गांव को क्या दें करके जाना चाहते हैं? कभी ये सोचा है कि हमारे 5 साल के बाद हमारा गांव हमें कैसे याद करेगा? जब तक हमारे मन में गांव के लिए कुछ कर गुजरना है - ये spirit पैदा नहीं होता है तो सिर्फ बजट के कारण स्थितियां बदलती नहीं हैं।

पिछले 60 साल में जितने रुपए आए होंगे उसका सारा total लगा दिया जाए, और फिर देखा जाए कि भई गांव में क्या हुआ तो लगेगा कि इतने सारे रुपए गए तो परिणाम क्यों नहीं आया? और इसलिए कभी न कभी पंचायत level पर सोचना चाहिए। कुछ राज्य ऐसे हैं हमारे देश में जहां पर पंचायतें अपना five year plan बनाती हैं, पंचवर्षीय योजना बनाती हैं। 5 साल में इतने काम हम करेंगे और वो गांव के पंचायत के उसमें वो board पर लिख करके रखते हैं और उसके कारण एक निश्चित दिशा में काम होता है और गांव कुछ समस्याओं से बाहर आ जाता है। हम भी आदत डालें कि भई हम 5 साल में हमारे गांव में ये करके जाएंगे। अगर ये हम करते हैं तो आप देखिए कि बदलाव आना शुरू होगा।

बजट और leadership दोनों का combination कैसे परिणाम लाता है? हम जानते हैं कि गांव में CC road बनाना ये जैसे एक बहुत बड़ा काम है और बहुत महत्वपूर्ण काम है इस प्रकार की मानसिकता बनी हुई है। इसके पीछे कारण क्या है वो आप भी जानते हैं, मैं भी जानता हूँ। लेकिन कुछ सरपंच ऐसे होते हैं जो CC road तो बना देते हैं, CC road तो बना देते हैं, लेकिन पहले से प्लान करके दोनों किनारों पर बढ़ियां पेड़ लगा देते हैं। वृक्षारोपण करते हैं और जैसे ही गांव में entry करता तो ऐसा हरा-भरा गांव लगता है। तो बजट से तो CC road बनता है लेकिन उनकी leadership quality है कि गांव को जोड़ करके रोड़ बनते ही पौधे लगा देते हैं और वो वृक्ष बन जाते हैं और एकदम से गांव में कोई आता है तो बिल्कुल नजरिया ही बदल जाता है। कुछ दूसरे प्रकार के होते हैं सरपंच जो क्या करते हैं और गांव में से कोई धनी व्यक्ति कहीं कमाने गया तो उसको कहते हैं कि ऐसा करो भाई तुम गांव को gate लगा दो। तो बड़ा पत्थर का 2, 5, 10 लाख का gate लगवा देते हैं। उसको लगता है कि मैंने gate बनवा दिया तो बस गांव का काम हो गया। लेकिन दूसरे को लगता है कि मैं पेड़ लगाऊंगा। आप भी सोचिए बैठे-बैठे कि सचमुच में जन-भागीदारी से जिसने पेड़ लगाए हैं, CC road, enter होते ही आधे कि.मी., एक कि.मी. हरे-भरे वृक्षों की घटा के बीच से गांव जाता है तो वो दृश्य कैसा होता होगा? ये है leadership की quality कि हम किन चीजों को प्रधानता देते हैं। इस पर इस काम का प्रभाव होता है.. जिसमें आपको बजट का खर्च नहीं करना है, आपको बजट की चिंता नहीं करनी है। जो मिलने वाला है.. जैसे बताया गया कम से कम 15 लाख और ज्यादा से ज्यादा 1 करोड़ से भी ज्यादा।

लेकिन इसके अतिरिक्त बहुत पैसा गांव में आता है। आंगनवाड़ी चलती है, प्राथमिक स्कूल चलता है, PHC centre चलता है, बहुत सी चीजें चलती हैं, जिसका खर्चा तो सरकारी राह से अपनी व्यवस्था से आता है। इसमें आपको कोई लेना-देना नहीं होता है। क्या कभी एक सरपंच के नाते, गांव की पंचायत के नाते हमने इन चीजों पर ध्यान केन्द्रित किया है क्या? कि भई, मेरे गांव में एक भी बच्चा ऐसा नहीं होगा कि जो टीकाकरण में वंचित रह जाए। हम पंचायत के लोग जी-जान से जुटेंगे, गांव को जगाएंगे कि भई टीकाकरण है, सभी बच्चों का हुआ है कि नहीं हुआ, चलो देखो! अब इसमें कोई पैसे लगते

है है क्या? बजट नहीं लगता है, leadership लगती है। एक समाज के प्रति कुछ कार्य करने के दायित्व का भाव लगता है।

हमारे गांव में स्कूल तो है, teacher है, सरकार बजट खर्च कर रही है, हमने कभी देखा क्या - कि भई हमारे teacher आते हैं कि नहीं? बच्चे स्कूल जाते हैं कि नहीं? समय पर स्कूल चलता है कि नहीं चलता? बच्चे खेलकूद में हिस्सा लेते हैं कि नहीं लेते? बच्चे library का उपयोग करते हैं कि नहीं करते? Computer दिया है तो चलता है कि नहीं चलता? ये हम एक पंचायत के नाते.. हमारे गांव के बच्चे पढ़-लिख करके आगे बढ़ें, आपको बजट खर्च नहीं करना है, न ही बजट की चिंता करनी है सिर्फ आपको गांव की चिंता करनी है, आने वाली पीढ़ी की चिंता करनी है।

हमारे यहां आशा worker हैं, आशा worker को कभी पूछा है कि आपका काम कैसा चल रहा है, कोई कठिनाई है क्या? हर गांव में भी सरकार है लेकिन वो बिखरा पड़ा हुआ है। क्या हम एक प्रयास कर सकते हैं क्या कि सप्ताह में एक दिन, एक घंटे के लिए, जितने भी सरकारी व्यक्ति हैं गांव में, उनको बिठाएंगे एक साथ और बैठ करके अपना गांव, अपना विकास.. उसके लिए क्या कर सकते हैं। बैठ करके चर्चा करेंगे तो शिक्षक कहेंगा कि मुझे ये करना है लेकिन हो नहीं रहा है, तो आंगनवाड़ी worker कहेंगी कि हां-हां चलो मैं मदद कर देती हूं, आशा worker कहेंगी कि अच्छा कोई बात नहीं, मैं कल आपके लिए 2 घंटे लगा दूंगी.. अगर गांव में हम leadership ले करके team बना लें, सरकार के इतने लोग हमारे यहां होते हैं लेकिन हमें भी पता नहीं होता। सरकार के इतने लोग हमारे यहां रहते हैं लेकिन हमें भी पता नहीं होता है। Even बस का driver, conductor भी रहता होगा और बस चलाता होगा, वो भी तो एक सरकार का मुलाजिम है। Constable होता होगा, वो भी एक मुलाजिम है। पटवारी है, वो भी एक मुलाजिम है।

क्या कभी हमने ये सोचा है, सप्ताह में एक घंटा कम से कम हम सरकार के रूप में एक साथ बैठेंगे? सामूहिक रूप से अपने पंचायत के विकास की चर्चा करेंगे। आप देखिए, देखते ही देखते बदलाव शुरू हो जाएगा, Team बनना शुरू हो जाएगा। और मैं वो बातें नहीं बता रहा हूं जिसमें बजट एक समस्या है। लेकिन वरना हमारे देश में एक ऐसा माहौल बना दिया गया है कि क्यों नहीं होता है, बजट नहीं है.. हकीकत वो नहीं है। बजट है लेकिन जो काम परिणाम नहीं देते हैं उसकी चिंता हमें ज्यादा करने की आवश्यकता है। हमारे गांव में कोई drop out होता है बच्चा, क्या हमें पीड़ा होती है क्या, हमारा खुद का बच्चा अगर स्कूल छोड़ दे तो हमें दुख होता है। अगर हम पंचायत के प्रधान हैं तो गांव का भी कोई बच्चा स्कूल छोड़ दे, हमें उतनी ही पीड़ा होनी चाहिए, पूरी पंचायत को दर्द होना चाहिए। अगर ये हम करते हैं, अगर ये हम करते हैं, मैं नहीं मानता हूं कि हमारे गांव में कोई अशिक्षित रहेगा। और कोई सरपंच ये तय करके कि मेरे कार्यकाल में पांच साल में एक भी बच्चा drop out नहीं होगा। अगर इतना भी कर ले तो मैं कहता हूं, उस सरपंच ने एक पीढ़ी की सेवा कर-करके जा रहा है। ऐसा मैं मानता हूं।

नरेगा का काम हर गांव में चलता है। क्या हम उसमें पानी के लिए प्राथमिकता दें? जितनी ताकत लगानी है, लगाएं लेकिन पानी का प्रबंधन करने के लिए ही नरेगा का उपयोग करें, तो क्या कभी पानी का संकट आएगा क्या? हम व्यवस्थाओं को विकसित कर सकते हैं। आवश्यकता ये है कि मिलकर के नेतृत्व दें। हमारे गांव में कुछ लोग तो होंगे जो सरकार में कभी न कभी मुलाजिम रहे हों। Teacher रहे हों, पटवारी रहे हों और retired हो गए हों। यानी सरकार का पेंशन लेते हों। सरकारी मुलाजिम होने के नाते, निवृत्त होने के बाद पेंशन लेते हों। किसी गांव में तीन होंगे, पांच होंगे, दस होंगे, पंद्रह होंगे। क्या महीने में एक बार इन retired लोगों की मिटिंग कर सकते हैं? उनका अनुभव क्योंकि वो खाली हैं, समय है उनके पास, अगर मान लीजिए गांव में 5 retired teacher हैं। उनको कहें कि देखिए भई अपने गांव में चार बच्चे ऐसे हैं, बहुत बेचारे पीछे रह गए, थोड़ा सा समय दीजिए, थोड़ा सा इन बेचारों को पढ़ाइए ना। अगर वो retired हुआ होगा न तो भी उसके DNA में teaching पड़ा हुआ होगा। उसको कहोगे हां-हां चलिए मैं समझ लेता हूं। इन चार गरीब बच्चों को मैं पढ़ा दूंगा, मैं उनकी चिंता करूंगा। हम थोड़ा motivate करें लोगों को, हम नेतृत्व करें आप देखिए गांव हमारा ऐसा नहीं हो सकता क्या? अपना गांव.. और मैंने देखा जी, देश में मैंने कई गांव ऐसे देखे हैं कि जहां उस सरपंच की सक्रियता के कारण गांव में परिवर्तन आया है।

मैं जब मुख्यमंत्री था, एक घटना ने मुझे बहुत.. यानी मेरे मन को बहुत आंदोलित किया था। खेड़ा district में, जहां सरदार पटेल साहब का जन्म हुआ था। एक गांव के अंदर पंचायत प्रधान के नीचे women reservation था। Women reservation था तो गांव वालों ने तय किया कि प्रधान अगर women है तो सभी member women क्यों न बनाई जाए? और गांव ने तय किया कि कोई पुरुष चुनाव नहीं लड़ेगा। सब के सब पंचायत के member भी महिलाएं बनेंगी। Reservation तो one-third था लेकिन सबने तय किया गांव वालों ने। एक दिन उन्होंने मेरे से समय मांगा पंचायत की सभी महिला सदस्यों ने और पंचायत के प्रधान ने। मेरे लिए बड़ा surprise था कि ये गांव बड़ा कमाल है भाई, सारे पुरुषों ने अपने आप withdraw को कर लिया और महिलाओं के हाथ में कारोबार दे दिया। तो मेरा भी मन कर लिया कि चलो मिलूं तो वो सब मुझे कोई 17 member का वो पंचायत थी। तो वो मिलने आई। और ये बात कोई 2005 या 2006 की

है। तो उसमें सबसे ज्यादा जो पढ़ी-लिखी महिला थी प्रधान थी, वो पांचवी कक्षा तक पढ़ी हुई थी। यानी इतना पिछड़ा हुआ गांव था कोई ज्यादा पढ़े-लिखे हुए लोग नहीं थे। तो ऐसे ही मेरा मन कर गया, मैंने पूछा उनको, मैंने कहा अब पंचायत सभी महिलाओं के हाथ में है, आपको गांव का कारोबार चलाना है तो क्या करना है, आपकी योजना क्या है करनी की? उन्होंने जो जवाब दिया, मैं नहीं मानता हूं हिंदुस्तान की सरकार में कभी इस रूप में सोचा गया होगा। कम से कम मैं मुख्यमंत्री था, मैंने इस रूप में नहीं सोचा था। उस जवाब ने मुझे सोचने के लिए मजबूर कर दिया था। ठेठ गांव की सामान्य महिलाएं थी।

मैंने उनसे पूछा कि अब पांच साल आपको कारोबार चलाना है तो क्या आपके मन में है? उस प्रधान ने जो कि पढ़ी-लिखी नहीं थी, उसने मुझे जवाब दिया। उसने मुझे कहा, "हम चाहते हैं कि हमारे गांव में कोई गरीब न रहे।" अब देखिए क्या कल्पना है ये, क्या कभी हमारे देश में पंचायत ने, नगरपालिका ने, महानगरपालिका ने, मिल-बैठकर के तय किया कि हम हमारे गांव में उस प्रकार की योजनाएं चलाएंगे कि गरीब गांव में कोई न रहे। एक बार इतने बड़े level पर काम शुरू हो जाए, कितना बड़ा फर्क पड़ता है! क्या हम कभी पंचायत के प्रधान के नाते विचार कर सकते हैं कि भई कम से कम 5 परिवार, ज्यादा मैं नहीं कह रहा हूं, 5 परिवार पंचायत की रचना में कुछ काम ऐसा निकालेंगे, उनको फलों का पेड़ बोने के लिए दे देंगे, कुछ करेंगे लेकिन 5 को तो गरीबी से बाहर लाएंगे।

अगर हिंदुस्तान में एक गांव साल में 5 लोगों को गरीबी से बाहर लाता है, पूरे हिंदुस्तान में कितना बड़ा फर्क पड़ता है जी? क्या कुछ नहीं कर सकते, आप कभी अंदाज लगाइए। और ये सारी बातें मैं बताता हूं कि बजट के constraint वाले काम नहीं हैं - हमारी संकल्प शक्ति, हमारी कल्पकता, इसके ऊपर जुड़े हुए हैं। अगर इस पर हम बल दें तो हम सच्चे अर्थ में इस व्यवस्था को अपने गांव के विकास के लिए परिवर्तित कर सकते हैं।

हम तब तक गांव का विकास नहीं कर पाएंगे जब तक हम गांव के प्रति गौरव और सम्मान का भाव पैदा नहीं करते हैं। उस गांव में पैदा हुए, मतलब सम्मान होना चाहिए। आप देखिए जिस गांव में महात्मा गांधी का जन्म हुआ होगा, उस गांव का व्यक्ति कभी कहीं मिलेगा तो कहेगा, मैं उस गांव से हूं जहां महात्मा गांधी पैदा हुए थे। कहेगा कि नहीं कहेगा? हर किसी को रहता है, कि कोई ऐसी बात होती है, गांव का गर्व होता है उसको। क्या हमने कभी हमारे गांव में, के प्रति एक लगाव पैदा हो, गांव के प्रति गर्व पैदा हो, ऐसी कोई चीज करते हैं क्या? नहीं करते हैं। क्या गांव का जन्मदिन मनाया जा सकता है क्या? हो सकता है कि record पर नहीं होगा तो गांव तय करे कि किस दिन को जन्मदिन मनाया जाएगा। उस दिन गांव इकट्ठा हो और गांव के बाहर जो लोग रहने गए हो, शहरों में रोजी-रोटी कमाने के लिए, किसी ने बड़ी प्रगति की हो, कोई पढ़-लिख करके डॉक्टर बना हो, उस दिन सबको बुलाया जाए। एक दिन सब लोग, नए-पुराने सब साथ रहें। कुछ बालकों के कार्यक्रम हो जाएं, कुछ बड़ों के कार्यक्रम हो जाएं, senior citizen के कुछ कार्यक्रम हो जाएं, गांव में सबसे बड़ी उम्र वाले व्यक्ति का सम्मान हो जाए। और एक अपनेपन का भाव! जो गांव से बाहर गए होंगे, उनको भी लगेगा उस दिन कि चलो भई अब तो हम रोजी-रोटी कमा रहे हैं, बड़े शहर में रहे रहे हैं चलिए अगले साल इतना हमारी तरफ से गांव के लिए दान दे देंगे, हमारे गांव में ये विकास कर दो। आप देखिए जन-भागीदारी का ऐसा माहौल बनेगा, गांव का रूप-रंग बदल जाएगा।

कभी आपने सोचा है, हमारी आने वाली पीढ़ी को तैयार करना है तो.. मैं कई बार गांव को पूछता हूं, भई आपके गांव में सबसे वृद्ध-oldest, oldest tree कौन सा है, कौन सा वृक्ष है जो सबसे बूढ़ा होगा? गांव को पता नहीं है, क्यों? ध्यान ही नहीं है! क्या हम पंचायत के लोग तय कर सकते हैं कि चलो भई ये सबसे बड़ी आयु का वृक्ष कौन सा दिखता है, ये सबसे बड़ा है, स्कूल के बच्चों को ले जाइए कि देखो भई अपने गांव की सबसे बड़ी आयु का वृक्ष ये है, ये है सबसे बड़ा वो, 200 साल उम्र होगी उसकी, 100 साल होगी उसकी, 80 साल होगी उसकी, जो भी होगा। चलो भई उसका भी सम्मान करें, उसका भी गौरव करें। यही तो है जो गांव के विकास का सबसे बड़ा साक्ष्य है। He is a witness! हम किस प्रकार से अपने गांव के गौरव को जोड़ें, गांव के साथ अपने आप कैसे लगाव लोगों का पैदा करें? आप देखिए अपने आप बदलाव आना शुरू हो जाएगा। और इसलिए मैं आग्रह करता हूं कि आप नेतृत्व दीजिए, अनेक नई कल्पकताओं के साथ नेतृत्व दीजिए।

हमारे देश ने बहुत बड़ा निर्णय किया है। कभी-कभी पश्चिम के देशों से बातें होती हैं और जब कहते हैं कि भारत में महिलाओं के लिए पंचायती व्यवस्था में reservation है तो कईयों आश्चर्य होता है। हिंदुस्तान में political process में decision making process में महिलाओं को इतना बड़ा अधिकार दिया गया है कि विश्व के बहुत बड़े-बड़े देशों के लिए surprise होता है। लेकिन कभी-कभी हमारे यहां क्या होता है।.. एक पहले तो मैं सरकार से जुड़ा हुआ नहीं था, संगठन के काम में लगा रहता था तो देशभर में मेरा भ्रमण होता था। तो लोगों से मिलता था। मिलता था तो थोड़ा परिचय भी करता था, एक बार परिचय देकर मैंने कहा, आप कौन हैं? तो उसने कहा मैं so and so SP हूं। तो मैंने कहा SP हैं! और political meeting में कैसे आ गए? क्योंकि मैं... SP यानी Superintendent of Police.. ये ही मेरे दिमाग में था।

क्योंकि SP यानी पुलिस - पुलिसवाला हो के ये meeting में कैसे आ गए? तो मैंने कहा SP... तो बोले नहीं-नहीं मैं सरकारी नहीं हूँ तो मैंने बोला क्या हैं? तो बोले "मैं सरपंच पति हूँ।"

अब कानून ने तो empower कर दिया लेकिन जो SP कारोबार चला रहे हैं भई... है ना? हकीकत है ना? अब कानून ने महिलाओं को अधिकार दिया है तो उनको मौका भी देना चाहिए। और मैं कहता हूँ जी, वो बहुत अच्छा काम करेंगी आप विश्वास कीजिए, बहुत अच्छा काम करेंगी। सच्चे अर्थों में गांव में परिवर्तन होंगे। अभी आपने छत्तीसगढ़ का भाषण सुना। बिना हाथ में कागज़ लिए गांव में क्या काम किया है, उन्होंने बताया कि नहीं बताया? और पता है उनको कि सरपंच के नाते अपने गांव में कितने काम हैं, किन-किन कामों पर ध्यान देना चाहिए, सब चीज का पता है। ये सामर्थ्य है हमारी माताओं-बहनों में। इसलिए ये SP वाला जो culture है वो बंद होना चाहिए। उनको अवसर देना चाहिए, उनको काम करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। और हम अवसर देंगे तो वे परिणाम भी दिखाएंगे।

तो मैं आज पंचायती राज दिवस पर आप सबको हृदय से बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूँ। जो award winner हैं, उनसे आप बात करेंगे तो पता चलेगा कि उन्होंने अपने-अपने यहां बहुत नए-नए प्रयोग किए होंगे, जो आपको भी काम आ सकते हैं। लेकिन अगर गांव तय करे तो दुनिया देखने के लिए आए, ऐसा गांव बन सकता है जी। ये ताकत होती है गांव की, एक परिवार होता है, अपनापन होता है, सुख-दुःख के साथी होते हैं।

उस भाव को फिर से हम जगाएं और गांवों को बहुत आगे बढ़ाएं, इसी एक अपेक्षा के साथ बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

महिमा वशिष्ट / रजनी, मुस्तकीम खान, लक्ष्मी

**पत्र सूचना कार्यालय
भारत सरकार
प्रधानमंत्री कार्यालय**

21-अप्रैल-2015 23:27 IST

सिविल सेवा दिवस पर आयोजित समारोह के समापन सत्र में प्रधानमंत्री के वक्तव्य का मूल पाठ

उपस्थित सभी वरिष्ठ महानुभाव एवं साथियों,

Civil Service Day कई वर्षों से मनाया जाता है। आप लोग भी पहले भी इस अवसर पर रहे होंगे। लेकिन इस बार कुछ बदलाव करने का विचार आया। एक प्रकार से बदलाव की शुरुआत हुई है। धीरे-धीरे यह shape लेगा कि Civil Services Day को कैसे मनाया जाए। जिन महानुभावों ने आज award प्राप्त किया है उन सबको मैं हृदय से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूँ, उन राज्यों को अभिनंदन करता हूँ, उन राज्य सरकारों को अभिनंदन करता हूँ। मैं कभी मसूरी आपके Institute गया नहीं हूँ, मैंने देखा नहीं है, लेकिन क्या वहाँ ऐसा है कि बड़े serious रहना, मुरझाए हुए रहना, ऐसे बड़े दुनियाभर का भार लेकर घूमना ऐसा है क्या। क्यों ऐसा हाल बनाकर बैठे हैं आप लोग? आप चिंता छोड़ दीजिए कोई नये काम मैं कहने वाला नहीं हूँ।

इस Civil Service Day में एक बात तो जरूर होनी चाहिए। किस प्रकार से हो, कैसे हो, आप लोग ज्यादा कह सकते हैं, उसमें मैं ज्यादा सुझाव नहीं दे सकता। उसमें मैं बेकार हूँ। लेकिन कम से कम.. जब शाम को आप नौकरी से घर जा रहे हैं, आपकी पत्नी दरवाजे पर इंतजार करती हो, बच्चे आपका इंतजार करते हो और बड़े उत्सुक हों आपके स्वागत के लिए, ऐसा माहौल कैसे बने। वरना क्या होता होगा, घड़ी भर अभी आने की Time हो गया चलो, चलो, जल्दी करो, बच्चा इधर भागे। क्यों? क्योंकि जो office में जो कुछ भी बोझ पड़ा होगा वो सब घर आकर के वर्षा करे देता है पत्नी पर, बच्चों पर। एक तनावपूर्ण जिंदगी। मैं नहीं मानता हूँ कि इससे हम किसी भी जांच को न्याय दे सकते हैं? नहीं दे सकते। और इतना बड़ा देश आपको चलाना है और अगर आप मुरझा गए तो देश का खिलना कैसे संभव होगा। और इसलिए मेरा एक भी साथी मुरझाया हुआ नहीं होना चाहिए।

आप काफी काम कर चुके होंगे, कभी सोचा है, कहीं ऐसा तो नहीं है कि आपकी जिंदगी फाइलों में बंध चुकी है। आपकी जिंदगी भी फाइल का कागज का एक पन्ना बन कर रह गया है। ऐसा तो नहीं हुआ न? सोचिए, मैं सच बताता हूँ, सोचिए। अगर आपकी जिंदगी फाइल बन गई है और जब कार्यकाल पूरा होगा तो आपका पूरा जीवन फाइल का एक पन्ना बनकर रह जाए, वो जिंदगी क्या जिंदगी जीना है जी, ऐसे जिओगे क्या? सरकार है तो फाइल है उसके बिना कोई चारा नहीं है। आपका एक दूसरा अर्द्धांग यही है - फाइल। लेकिन अगर Life की care नहीं की तो यह फाइलें भी वैसी की वैसी रह जाएगी।

और इसलिए कभी आप सोचिए, आप तो इतनी सारी चीजें पढ़ते होंगे, इतनी चीजें सीखते होंगे। दुनिया के बढ़िया से बढ़िया लोगों की आपने किताबें पढ़ी होगी, क्योंकि मूलतः तो आप इसी प्रकृति के होंगे तभी तो यहां पहुंचें होंगे। कोई जिंदाबाद-मुर्दाबाद वाला यहां नहीं आता है। जो कॉलेज में यूनिशन बाजी करता है, वो यहां थोड़ा होता है। जो किताबों में खोया हुआ रहता है, वही तो होता है। बहुत कुछ पढ़ा होगा। Time Management पर, पता नहीं आपको भी कहा जाए तो बहुत बढ़िया किताब लिख सकते हैं आप। बहुत अच्छी लिख सकते हैं। और आप जीवन में भी इतना बढ़िया Time Management करते होंगे कि प्रधानमंत्री के साथ इतने से इतने बजे Meeting, फलाने के साथ इतने से इतने बजे तक Meeting, Chief Secretary के साथ इतने से इतने बजे, अपने सचिव के साथ इतने बजे... सब perfect करते होंगे आप। लेकिन क्या कभी परिवार के साथ quality time बिताते हैं क्या? और मैं शब्द प्रयोग करता हूँ quality time, मैं चाहूंगा कि Civil Services Day पर मेरे साथी यह भी सोचें। मैंने कहा मैं इसमें गाइड नहीं कर सकता आपको। मैं इसमें बेकार हूँ। लेकिन जो कर सकते हैं वो सोचें। कभी-कभार आप एक छत के नीचे रहते हैं फिर भी आप घर में होते हैं, ऐसा नहीं होता है जी। तब भी फाइलें लेकर चलते हैं, तब भी फोन लेकर चलते हैं, तब भी कोई crises आ जाती है। पता नहीं क्या कुछ होता है। और कभी कभार तो ऐसा संकट न आए तो आपका दिन भी अच्छा नहीं जाता होगा। यार पता नहीं आज कुछ आया नहीं। आप कल्पना कीजिए कहीं आपका जीवन Robot तो नहीं हो गया है। और अगर ऐसा हुआ है तो उसका सौधा असर पूरी सरकार पर पड़ता है, पूरी व्यवस्था पर पड़ता है।

हम Robotic नहीं हो सकते। हमारा वो जीवन नहीं हो सकता। और इसलिए हम जब भी Civil Service Day मनाएं तो कुछ पल अपनों का खयाल रखने के लिए भी तो रखा जाए। वो बातें हो, वो experience हैं, मैं यह इसलिए कह रहा हूँ मैं जब मुख्यमंत्री था तो मैं कर्मयोगी अभियान चलाता था। कर्मचारी कर्मयोगी बने, that was my कोशिश। तो शुरू में जब मैंने किया तो जैसे हर बार Training यानी Punishment आप सब यही मानते हैं, यहां पहुंचे हुए भी यही मानते होंगे। ठीक, अब वो मुझे क्या पढ़ाएंगे, इतने साल.. मैं यहां तक पहुंचा हूँ, मैं तो rank holder रहा हूँ उसके लिए बोझ लगता है, तो शुरू में मुझे भी ऐसा आया कि यह क्या। और 72 hour का कैप्सूल था। हरेक के लिए वो शुरू किया था मैंने। जब मैंने शुरू किया तो ऐसा सुनता था कि ऐसा क्या आ रहा है। मुझे तो कोई कहता नहीं था, लेकिन कान में बातें आती थीं।

फिर एक दिन मैंने चार महीने हो गए कार्यक्रम चल पड़ा। Friday, Saturday, Sunday हो रहा है तो मैंने एक दिन feedback के लिए meeting रखा था। जिनका एक class हो गया था ऐसे लोगों को बुलाया। एक ने मुझे बहुत बढ़िया बताया। वो पुलिसवाला था। उसने कहा कि साहब मैं यहां जब मुझे कहा गया कि जाना है तो मैं बहुत, क्या मेरे मन को लगा कि क्या यह फिर से आया कि लेकिन बोले कि मैं आज दो बातें बताना चाहता हूँ।

एक ये 72 hours का time है। थोड़ा बढ़ाएँ, अधिक समय रखिए। अब ये मेरे लिए surprise था। तो फिर मैंने ये तुम्हारा side posting तो नहीं है। तो उसने कहा नहीं-नहीं साहब मुझे बहुत अच्छे से duty मिली है। फिर दूसरा उसने कहा कि जब 72 hours के बाद जब पहली बार लगा कि मैं पुलिस वाला तो हूँ, लेकिन मैं इंसान भी हूँ बोले मैं भूल चुका था कि मैं इंसान हूँ। मैं चौबीसों घंटे पुलिसवाला बन गया था। जब तक हमारे भीतर का इंसान जिंदा नहीं रहता। हम इंसानों के लिए जीने की ख्वाहिश छोड़ चुके होते हैं। तो और इसलिए हमारी सफलता की सबसे पहली नींव है, हमारे भीतर का इंसान, हमारे भीतर की इंसानियत, अपनापन, अपनों के लिए जीना, जूझना, ये चीजें एक बहुत ताकत देती हैं और इसलिए मैं जब ये civil services day को मनाते हैं तो कुछ तौर-तरीकों पर सोचा जाए तो मैं जरूर चाहूंगा।

जब ये इस civil services day का प्रारंभ हुआ। सरदार पटेल ने जब पहली बार probationers को संबोधित किया तो उस दिन को उनके साथ जोड़ा है आज 21 अप्रैल को। 1948 का वो दिन था। मुझे बताया गया है कि मसूरी में आप लोगों के लिए एक Motto वहां लिखा हुआ रहता था। मैं ज्यादातर लोगों को पूछता रहता हूँ कि मसूरी में वो आपका वो Motto है, वो क्या है। जो नए-नए आते हैं उनको तो याद होता है, लेकिन पुराने करीब-करीब सब भूल गए हैं। वहां लिखा हुआ है। 'शीलं परम भूषणम्' मसूरी में, ये ही हैं न, भूल गए याद है, जो नए हैं उनको तो मालूम है। इस सरकार में जिसने भी इस व्यवस्था की रचना की है। उसे उस दिन भी पता था यानि आज ये कोई संकट आया है ऐसा नहीं है। उस दिन भी पता था कि सारी व्यवस्था के केंद्र बिंदू में एक चीज कहीं छूटनी नहीं चाहिए। वो है 'शीलं परम भूषणम्'।

मैं चाहूंगा civil service में रहने वाले हर व्यक्ति के लिए ये वाक्य नहीं है, घोष वाक्य नहीं है, ये शब्द संरचना नहीं है, ये Article of faith है। ये जीवन जीने का एकमात्र सिद्धांत है, एकमात्र मार्ग है और इसलिए जहां से मैं निकला हूँ, जहां पहुंचा हूँ, वहां से मुझे केवल एक मंत्र की दीक्षा दी गई थी, तो वो दीक्षा थी "शीलं परम भूषणम्" और हमारे यहां तो western law हो या ये हो। If character is lost, every thing lost, ये हम सुनते आए हैं, सुनाते भी आए हैं और इसलिए उस बात का बार-बार हमें स्मरण कैसे हो, वहां मुझे बताया गया सरदार वल्लभ भाई की एक प्रतिमा भी है। उस प्रतिमा के नीचे लिखा गया है। आप एक स्वतंत्र भारत की तब तक कल्पना नहीं कर सकते, जब तक आपके पास अपने को स्वतंत्रतापूर्वक अभिव्यक्त करने वाली प्राशसनिक सेवा न हो। मैं समझता हूँ ये बहुत सटीक message है सरदार साहब का और सरदार साहब के साथ इस प्रशासनिक सेवा का नाम सर्वदा जुड़ा हुआ है।

सरदार साहब को जब याद करते हैं तो भारत के एकीकरण, इस बात को हम प्रमुख रूप से याद करते हैं। राजा-रजवाड़ों को जोड़कर के देश को एक नक्शे में जोड़ने का काम सरदार वल्लभ भाई पटेल ने किया। लेकिन आजादी के बाद अब तक विशेष रूप से इस सेवा से जुड़ा लोगों का एक बहुत बड़ा काम है और वो है सामाजिक एकीकरण, आर्थिक एकीकरण। इस मकसद की पूर्ति के लिए, जिस सरदार साहब ने हमें उपदेश दिया था। वहां से यह हुई है। वर्तमान में इन दो पहलुओं को लेकर के हम कैसे आगे बढ़ सकते हैं। हम इस सामाजिक एकीकरण के लिए क्योंकि हम एक राष्ट्रीय एकता का प्रतिनिधित्व करते हैं, उस व्यवस्था से है। हम कहां पैदा हुए, किस भाषा को जानते हैं, क्या है, कुछ नहीं। कभी किसी को उस state में जाना पड़े, कभी किसी को इस state में जाना पड़ा और पूरा हिंदुस्तान अपना घर है, परिवार है, उस भाव से काम करने के लिए यह किया गया है और तब जाकर के हमारे हर काम में से, एकता का मंत्र साकार होता रहे।

अगर हम digital world में जाते हैं, तो भी वही एकता का मंत्र, हम इस प्रकार से आगे बढ़ेंगे ताकि हमारी society में digital divide न हो। हम विकास का वो रास्ता खोजेंगे कि जिसके कारण गरीब और अमीर का फासला बढ़ता न जाए, हम विकास का वो model तैयार करेंगे, जो शहर और गांव के बीच में भेद पैदा करता न हो, एकता, एकीकरण के रास्ते पर हमें ले जाता हो। उस बात को हम अपने मूल मंत्रों के साथ जोड़ते हुए, अपनी विकास यात्रा को कैसे चला सकते हैं।

उस दिशा में हमने प्रयास करना चाहिए। आने वाले दिनों में जिनको award मिला है। उसमें मेरे मन में कुछ सुझाव आते हैं। एक तो हिंदुस्तान के सभी राज्यों से हो सके तो young अफसर, ये award winner भी तो ज्यादा young है। हर राज्य से निश्चित तारीख पर 5 दिन के लिए उस project को देखने के लिए जाए। जहां पर जिसको हमने award दिया है। वो क्या project है, कैसे किया गया है, conceptualize कैसे हुआ, resource क्या थे, कानूनी व्यवस्थाएं क्या की गईं, infrastructure क्या खड़ा किया गया। पूरे देश से एक-एक व्यक्ति उस project पर जाए, पूरा देखे। दूसरा project पर दूसरी टोली जाए। मान लीजिए आपके 10 award हुए हैं तो हर राज्य से 10 लोग निकलें और एक प्रकार से जब वो वापिस आएंगे तो दसों जो best award winner project हैं। उस राज्य को पता होगा कि ऐसे हुआ है फिर वो अपने राज्य के अंदर समझाएं कि मैं वहां गया था। नागालैंड में एक अफसर ने इतनी कठिनाइयों के बीच में इतना बड़ा काम किया है, ऐसे-ऐसे किया है। मैं समझता हूं किसी प्रधानमंत्री के भाषण की जरूरत नहीं पड़ेगी वो जाकर के देखकर के आएगा, कठिनाइयों में अपने साथी ने जो achieve किया होगा। वो अपने राज्य में आकर के, अपने जिले में आकर के जरूर लागू करेगा। ये मैं विश्वास से कहता हूं और इसलिए award किताब में छप जाए, ये नहीं चलेगा। जो अच्छा है उसका हमें adopt करना चाहिए, जो अच्छा है उसको modify कर-करके उसे reflect कैसे किया जाए, उसकी व्यवस्था कैसे कि जाए लेकिन हमने इन चीजों का institutionalize किया जाना चाहिए। इस बार से शुरू किया जाए।

इस award के बाद राज्यों को कहा जाए कि इसमें जिसको रुचि है। किसी को skill development में मिला है award, तो उनको ले जाइए, किसी को child welfare में मिला है तो उनको ले जाइए और मजा देखिए, मजा देखिए। आपको भी मैं कहता हूं जब आप निवृत्त हो जाएंगे। सुब्रह्मण्यम जी की age के हो जाएंगे, आपके घर में पोते होंगे और बुढ़ापा ऐसी चीज होती है, album में time गुजारना अच्छा लगता है, स्मृतियों को संजोए रखने में अच्छा लगता है तो आपके पोते को आप कहोगे कि देखिए पहले तो हम ऐसे घर में रहते थे, अब ऐसे मकान में आ गए। देखिए पहले तो मेरे पास स्कूटर था अब देखो ये गाड़ी है। दावे से मैं कहता हूं आपको, आपके पोते को अगर आप ये कहोगे कि पहले ऐसी गाड़ी थी, फिर ऐसी गाड़ी आई, फिर ऐसी गाड़ी आई, पहले किराए का मकान था, फिर फ्लैट आए, फिर बंगला आया, उसके दिल को कभी कोई प्रभाव पैदा नहीं करेगा। लेकिन अगर आप अपने पोते को ये कहोगे कि मैं civil service में काम करता था, उस राज्य के उस जिले में था और नौकरी पर मैंने देखा था। उस एक गांव ऐसा था, उस गांव को पीने का पानी नहीं मिलता था, सात किलोमीटर जाना पड़ता था। मैंने ऐसी योजना बनाई थी और उस गांव को पानी मिला। मैं दावे से कहता हूं वो आपका पोता, अपने पोते को भी सुनाएगा कि मेरे दादा ने ये काम किया था। ये मत भूलिए कि आपकी गाड़ी, बंगला, पैसे, प्रतिष्ठा, आपके पोते भी याद रखने वाले नहीं हैं। ये विश्वास कीजिए मेरी बात पर, वे भी उस बात को याद करेंगे, आप जिए कैसे, किसके लिए जिए, समाज और देश ने आपको दिया, आपने उनको क्या दिया। आपका बेटा भी इसी कसौटी पर आपको कसने वाला है और इसलिए इन सबका देखिए कोई award ऐसा नहीं है कि उसने किसी औद्योगिक विकास के लिए क्या काम किया। social sector में क्या काम हुआ वो ही award पा गए हैं।

इसका मतलब ये नहीं कि competition में और नहीं आए होंगे। कितनी entries आती हैं average, सौ, सवा सौ, डेढ़ सौ entries आती हैं। उसमें से पांच-दस का नंबर लगता है और ऐसा भी नहीं है कि ...बैंक के ज्यूरि बैठी होगी, किसी sector को देती होगी। यही है जो inspire करती है, यही है जो परिणाम लाती है और यही है जो देश चाहता है और हमारे अपने कामों में, अपने निजी विकास में हम इसको कैसे करें और इसलिए award किस प्रकार से उसको लाया जाए, ये मैं समझता हूं। हम ये करें कि जिसको award मिला है, हर जगह पर ले जाकर के भाषण करवाएं तो उससे फायदा नहीं होगा। Actually जहां हुआ है वहां जाकर के study होना चाहिए। उसको कहना चाहिए, report तैयार होना चाहिए तब जाकर के फायदा है। दूसरा फायदा civil service day को हम एक युवा मित्र day के रूप में भी, आप बाहर महीने काम करते हैं, पांच दिन काम नहीं करोगे तो दुनिया अटक नहीं जाएगी, क्योंकि बाकी बहुत लोग हैं। मैं जब नया-नया मुख्यमंत्री बना तो किसी सचिव को बुलाता था, तो पीछे एक बड़ी फौज आती थी। मैंने कहा भई इतने सारे क्यों आए, हम नए थे, हम कुछ ज्यादा जानते नहीं थे, अनुभव नहीं था तो वो क्या होता था।

तो वो क्या होता था मैं उनको कुछ पूछता था न, तो वो यूं देखते थे, तो पीछे वाला यूं कहता था और यह बड़े ऑफिसर एक शब्द तो पकड़ लेते थे और वो मुझे समझा देते थे कि मैं समझ गया कि रहस्य क्या है, तो मैंने मेरे यहां तय किया था कि मैं जिसको बुलाऊंगा वही आएगा, फौज लेकर के नहीं आएगा। उनको फिर काफी मेहनत पड़ती थी, तकलीफ रहती थी। लेकिन उसके कारण institution में बहुत बड़ा improvement आया, पूरी institution में improvement आया। कहने का तात्पर्य मेरा दूसरा था क्या यह हम कर सकते हैं क्या? इस सर्विस से जुड़े हुए लोग इस Civil Service Day के कालखंड में छुट्टियां होती हैं तो हमें अवकाश नहीं है। लेकिन कोई एक और समय तय किया जाए, fixed time किया जाए।

जिस समय कॉलेज में जाकर के हर Civil Service में जुड़ा हुआ व्यक्ति at least साल में एक बार student को संबोधित करे, उनसे मिलें, बातचीत करें, उनको समझाए कि मैं इस field में क्यों आया। मेरे सामने क्या कुछ नहीं था, मैं अमेरिका

जा सकता था, मैं यह बन सकता था, मैं वह बन सकता था। मैंने यह सब छोड़ा, मैं क्यों यहां आया। और आकर के मेरे इतने साल का अनुभव क्या है। हमारी युवा पीढ़ी को यहां पर लाने के लिए प्रेरित करने का समय आ गया है। क्योंकि globally इतनी बड़ी competition है top class human resource की कि फिर अच्छे-अच्छे लोग कहीं और चले जाएंगे, हमारे पास अच्छे लोग नहीं आएंगे। लेकिन हम अगर उसको inspire कर पाएं और मैं कर नहीं पाऊंगा, आप कर पाएंगे। क्योंकि आप अपने अनुभव से बताएंगे कि मेरे जीवन में इतने-इतने अवसर थे, मैंने छोड़ा मैं यहां चला गया और यहां तो मुझे संतोष क्या है। अगर मैं एक डॉक्टर होता तो मेरे जीवन काल में 50 लोगों की जिंदगी बचाता। लेकिन डॉक्टर होने के बाद IAS बना और Health Secretary बना, तो मैंने यह नीतियां बनाई, पूरी पीढ़ी को बचा लिया। कितनी बड़ी ताकत होती है। और इसलिए यह विश्वास हमारी नई युवा पीढ़ी को पैदा करने के लिए।

हमारे यह जितने साथी हैं हरेक के लिए तय हो कि कम से कम एक lecture लेना है। और यह भी तय किया जाए Mapping कि भई मानो इस वर्ष 200 colleges हो गई, तो अगली साल दूसरी colleges लीजिए। लेकिन student के पास यह field क्या है, ये लोग कौन हैं, ये कैसे काम करते हैं, यह training क्या होती है। दिनभर वो रहे, एक भाषण हो, बाकी गप्पे-शप्पे, चायपान हो एक प्रकार का मिलने-जुलने का कार्यक्रम Civil Service Day के रूप में extend करने की आवश्यकता मुझे लगती है, ताकि नई पीढ़ी को पता चले। और मैं मानता हूं यह हमारी institution इतनी ऊंचाई पर न चली जाए, कि समाज से कट हो। यह लगातार उसको समाज से जुड़ने के अवसर खोजने पड़ेंगे।

तीसरा मेरा एक सुझाव है कि हम 75 plus वाले जितने retired IAS अफसर हैं यानी जितने भी हमारे Civil Services के अफसर हैं। 75 plus उनको सम्मानित करने का कार्यक्रम कर सकते हैं। हर वर्ष न करें तो दो वर्ष, तीन वर्ष, पांच वर्ष। ऐसा भी किया जा सकता है कि पांच साल में एक बार। सबको इकट्ठा करके और हर साल हर कैडर अपना IPS वाले अपना करे, IFS वाले अपना करे, हर राज्य में हो। इससे क्या होगा देखिए जो 35 साल, 40 साल तक अफसर देश के महत्वपूर्ण निर्णयों का सार्थी रहा हो। वो एक इंसान retired नहीं होता है जी, वो जाता है तो पूरी institution अपने साथ लेकर जाता है। उसे ऐसे जाने नहीं देना चाहिए। उसके अनुभव का निचोड़ हमें लेते रहना चाहिए। सम्मान करना चाहिए, बुलाना चाहिए और तीसरा एक काम हर राज्य में वीडियो कॉन्फ्रेंस की टीम होती है, State Capital जितने IAS अफसर हैं वो और बाकी सब वीडियो कॉन्फ्रेंस में। State में ये जो senior लोग हैं, उनसे कभी गोष्ठी का कार्यक्रम रखा जाए, institutional memory सरकार के लिए अनिवार्य होती है जी। institutional memory के बिना सरकारें नहीं चल सकती हैं।

सरकारें नहीं चल सकती हैं और इस चीज को हम धीरे-धीरे खो रहे हैं। पहले का जमाना था। आपे जाते समय एक नोट लिखकर के जाते थे, क्या बोलते हैं इसको, successor के लिए, मैंने सुना है इन दिनों ये सब, वो आता है आइए-आइए, कुर्सी देकर के चला जाता है। देखिए मैं समझता हूं जिन्होंने व्यवस्थाएं विकसित की होंगी इसका बड़ा... देखिए gazette, आप district के gazette देखिए जी, मुझे मालूम नहीं कि नए पीढ़ी के लोग देखते हैं कि नहीं लेकिन, मैं देखता था मुझे अपना शौक था और जब district gazette की चीजें देखता था तो मैं हैरान था कि इस समय कैसे निर्णय महत्वपूर्ण हो गए।

मुझे मालूम है एक बार क्या हुआ, मैं डाक जिले में गया। डाक जिले की एक विशेषता रही है। एक प्रकार से डाक कभी गुलाम नहीं रहा। ऐसा विशिष्ट प्रकार का एक इलाका है। एक प्रकार से कभी गुलाम नहीं रहा वो, वो अलग से उनकी एक व्यवस्था थी तो मेरी ये रुचि थी, मैं देखने गया, मैं वहां गया। मैं थोड़ा मौका मिलता जंगलों में जाने का, आदत है, अच्छा लगता था। तब मैं मुख्यमंत्री नहीं था, तो मैं ऐसी ही खाली अपना जाता था। मैंने देखा कि इतने guest house बने हुए हैं डाक district में, मैं हैरान था यार कि ये पैसों की बर्बादी, guest house बहुत बढ़िया है और इतना बढ़िया लकड़ी, इतना बढ़िया है तो मेरे मन में आया यार इतने। मुझे उस gazette में से पता चला कि अंग्रेज लोग हाथी पर travelling करते थे, जंगल थे। हाथी एक दिन 20 किलोमीटर से ज्यादा चलाते नहीं थे, चलता नहीं था और इसलिए हर 20 किलोमीटर पर guest house था। आज मुझे परेशानी हो रही थी कि इतने guest house क्यों हैं, कहने का तात्पर्य है कि जो व्यवस्थाएं चलती हैं उनके मूल में कुछ न कुछ कारण है। कभी-कभी हमारा बड़ा उत्साह होता है कि नया कर दें, फलांन कर दें, ठिक कर दें लेकिन history को हाथ लगाकर बढ़ाना चाहिए। कभी-कभी ये इतनी परंपराओं से बनते-बनते व्यवस्थाएं विकसित होती हैं, उन जड़ों को कभी भी उखाड़ फेंककर के हम नई व्यवस्थाओं को नहीं ला सकते हैं और इसलिए institutional memory, मैं समझता हूं कि हमारे लिए बहुत आवश्यक है। उसके लिए अगर वो धीरे-धीरे लुप्त हो रही है तो पुर्नजागृत करनी चाहिए।

मैंने अभी एक विषय रखा हुआ है। अब वो कितना सफल होगा, नहीं होगा, मुझे मालूम नहीं है। मैं time management में गड़बड़ करूं तो चलेगा न, क्योंकि आप दो दिन से सुन-सुनकर के तंग आ गए होंगे। उसमें मैं ज्यादा ही कुछ कह दूं। मेरे मन में क्या विषय था, छूट गया। हां, मेरे मन में एक विचार चल रहा है। मैंने कहा है, अब देखिए technology का

उपयोग कैसे हो सकता है, हमने कहा है हम एक memory cloud हम तैयार करें और शायद हमारे department ने कुछ काम शुरू किया है और एक अनुभव platform बनाएं। जो भी व्यक्ति retire होता है, हिंदुस्तान के किसी भी कोने में, driver हो तो भी, chief secretary हो तो भी, चपरासी से लेकर, chief secretary तक कोई भी जो सरकार में retire हो रहा है, उसको कहा जाए कि भई तुम नौकरी आरंभ की और retire होने तक जो भी अच्छी बातें तुम लिख सकते हो, महत्वपूर्ण घटनाएं लिख सकते हो, लिखो और इसको cloud में डाल दो, फोटो भी डालनी है तो डाल दो, तुम्हारी पहली नौकरी वाली फोटो भी डालनी है तो डाल दो, अब कोई cupboard की, जगह की कोई कमी नहीं रहेगी, पूरी space आपके हवाले है। आप कल्पना कर सकते हैं कि 50 साल के बाद किसी को, किसी राज्य का, किसी देश का administrative reform पर लिखना हो, समाज जीवन पर लिखना हो, इतना बड़ा खजाना कभी उपलब्ध हो सकता है क्या सहज है जी, सहज करने वाला है बड़ा काम है। हम अभी से उनसे कहे कि भी तुम जब retire होंगे तो तुम्हें retire होते समय दो पेज-पांच पेज, जितनी तुम्हारी लिखने की ताकत, बढ़िया सा चीजें। हो सकता है कुछ negative भी होगा, कुछ होंगे जिसकी शिकायत रही होगी मुझे ऐसा posting मिला, मुझे ऐसा posting मिला, सारी दुनिया भर को लिखता रहता होगा। जो भी हो, लेकिन हमारा काम है कि देश चलाना है तो हमें इन व्यवस्थाओं को विकसित करना चाहिए। Technology का प्रयोग करके हम इसको कर सकते हैं और इसको करने का हमारा प्रयास रहना चाहिए और मैं मानता हूँ कि अगर हम इस बात को करते हैं तो कर सकते हैं।

दूसरा मुझे लगता है जाने अनजाने में भी मैं जानता हूँ इसी जमाने में सरकारी व्यवस्थाओं को काम करने की स्थिति अलग थी। आज ज्यादातर pressure priority बन जाता है, यह स्थिति आई है। और इसलिए consistency होनी चाहिए, rhythmical कुछ काम होने चाहिए, internal reform होने चाहिए उसके लिए उसके पास कठिनाईयां हैं, यह मैं जानता हूँ। उसमें आपका कोई दोष नहीं है। कुछ कुछ ऐसी हालत है। लेकिन उसके बावजूद भी, उसके बावजूद भी हमारा सिर्फ department चलाना इतना नहीं है। हमारा काम within department उसको modernize करना है, उसको strengthen करना, innovate करना, यह निरंतर प्रक्रिया होती रहनी चाहिए। निरंतर प्रक्रिया नहीं होगी तो क्या होगा, कैसे होता है मैं बता दूँ।

आपको आज जानकार हैरानी होगी देश आजाद हुआ 1947 में 2001 तक हिंदुस्तान में disaster.. agriculture department में था, क्यों? क्योंकि 2001 तक हमारी समझ यह थी कि बाढ़ और सूखा यही disaster होता है। बाढ़ या सूखे के अलावा कोई disaster होता है, यह हमारी सरकारी व्यवस्था या सोच में ही नहीं था। ऐसा नहीं था कि नहीं होती थी। 2001 में जब गुजरात में भयंकर भूकंप आया और सरकार व्यवस्थाओं को पुनर्विचार करना पड़ा और पहली बार disaster शब्द को agriculture से बाहर निकाल करके महत्वपूर्ण ministries के साथ जोड़ा गया, जिसका सीधा राज्यों के साथ संबंध रहे। यह बदलाव लाते लाते इतने साल लग गए और इतने बड़े भूकंप का इंतजार करना पड़ा। अगर हम स्वभावतः यह जरूरी नहीं है कि 47 में वो जैसे सरदार पटेल जिस समय Home Minister थे, यह administration भी उन्हीं के under में था। आज Administration Department बना तो समय रहते बदलाव आते हैं। मैं मानता हूँ कि आप उस टीम के लोग हैं जिनका काम उन institutions को जन्म देना भी है, जो institutions आने वाले 25 साल, 50 साल सेवा में अधिक ताकतवर बनती जाएं। और इसलिए Civil Services Day पर जब हम काम करते हैं तो हमारा यह काम रहना चाहिए कि हम इस reform को कैसे करें।

एक report मेरे ध्यान में लाया गया है। मैं जानता हूँ कि मेरे पूरे भाषण का महत्व नहीं है, लेकिन मैं मीडिया के लोगों को प्रार्थना करूंगा कि अब जो मैं कहने जा रहा हूँ उसकी पर अटक न जाए वो। यह कठिनाई है जी देश की क्या करे। और जो मैं कह रहा हूँ वो मेरी सरकार का नहीं है। परे फिर भी मैं चाहता हूँ इसका negative उपयोग नहीं होना चाहिए। हर चीज को positive सीखना चाहिए, इसलिए मैं कह रहा हूँ।

Goldman Sachs का एक रिपोर्ट कहता है कि Government और Governance का जो effectiveness है, पूरे एशिया की जो average है, मैं बाहर की बात नहीं बता रहा हूँ, मैं western world की बात नहीं बता रहा हूँ। एशिया की जो average है, उस level पर हिंदुस्तान की Governance की effectiveness को लाना है, तो It will take ten years एक Goldman Sachs ने हमको दर्पण दिखाया है। क्या हम ऐसे ही चलेंगे। और जब हम उस average पर पहुंचेंगे, तब तो वो कहां पहुंच गए होंगे फिर तो हम वहीं लुढ़के रहेंगे। Asian Countries की Average के बराबर भी अगर आज हमारा Governance effectiveness नहीं है, तो यह कब की समय की सरकार, से है इस चक्कर में मुझे नहीं पड़ना है। और मुझे किसी की आलोचना नहीं करनी है। मैं इसे आत्मनिरीक्षण के लिए देखता हूँ और हम वो लोग बैठे हैं जिनका सामूहिक दायित्व बनता है। मैं और तुम नहीं हम। हमारा दायित्व बनता है। और मैं समझता हूँ एक दूसरी बात उन्होंने कही है।

Civil Service Reform के कारण per-capita growth 1 percent बढ़ता है, ये ताकत है। आपको आर्थिक विकास करना

हो, infrastructure sector बनाना हो, agriculture sector में प्रगति करनी हो, service sector में प्रगति करनी हो, Effective Governance, Reforms, Administrative system में Reform और ये नीति विषयक बातें बहुत बड़ी नहीं होती हैं, अंदरूनी व्यवस्थाएं होती हैं। जैसे हम कहते हैं कि भई e-governance is not simply a word, अब मैंने तो स्थिति शायद बदली है कि आज लगने लगा, mobile phone पर दुनिया चलाने लगे। वरना पहले सरकारों का ध्यान computer खरीदने पर रहता था, बड़ा कार्यक्रम रहता था computer खरीदना क्यों, दुनिया को लगता था। अब आज भी कोई आए, आपको मिलने को आए और उसके हाथ में i-pad नहीं है तो लगता है ये पुराना आदमी है, ऐसा लगता है। समाज की सोच बदल रही है फिर क्या हुआ। तो जैसे पहले गुलदस्ता रखते थे table पर अब computer रखने लगे हैं, कोई आए तो बड़ा अच्छा लगता है। थोड़ा समय गया तो computer convert in to cup-board, सामान भरने देते हैं। अभी भी ये technology, analysis के लिए सबसे बड़ी ताकत technology है। इस दिशा में अभी पहुंचना तो बाकी है। ज्यादा-ज्यादा cup-board के रूप में माल रखते रहो भाई। file आई scan करो और डाल दो।

कहने का तात्पर्य ये है कि e-governance is effective governance, economical governance, easy governance और वो दिन दूर नहीं है जब दुनिया mobile governance पर चलने वाली है। लेकिन हम अपने आपको सजग नहीं करेंगे तो फिर मैं समझता हूं कि हम कितने ही ताकतवर क्यों न हो, दुनिया हमसे जो अपेक्षा कर रही है, उसको पूरा नहीं कर पाएंगे और इसलिए हमारे लिए आवश्यक है कि हम reform को बल दें और reform ही हमारी ताकत है और उसमें political leadership का कोई role नहीं है, कोई role नहीं है। हम लोग इस दिशा में आगे बढ़ें, इसको करना चाहिए।

तीसरी एक महत्व की बात उन्होंने कही है Goldman Sachs ने, उसने कहा कि worldwide governance का जो index है। 2004 में हम 55 देशों से आगे थे, हमारे पीछे 55 थे। 2013 में हम 8 नंबर पीछे चले गए, इसका मतलब ये हुआ, एक बात आप मानकर चलिए, झरना कितना ही प्यारा क्यों न हो, झरने का संगीत कितना बढ़िया ही क्यों न हो, लेकिन उसको आगे जाकर के, विराटता की ओर जाने का अवसर नहीं है तो झरना कहीं सूख जाता है और इसलिए हमारी व्यवस्था भी हम कहीं से भी शुरू करें विराट की तरफ जाने के लक्ष्य की तरह चलनी चाहिए वरना ये सब किया-कराया सूख जाएगा। कितनी ही पीढ़ियों ने हमें यहां तक पहुंचाया है, कितने ही Cabinet Secretary बनकर के गए होंगे, कितने ही Chief Secretary बनकर के गए होंगे, कितने ही Secretary बनके गए होंगे, उन सबके पुरुषार्थ से आज हम पहुंचे हैं, अब हमें उसको तेज गति से आगे ले जाना, ये हमारा दायित्व बनता है। वो उन्होंने जो दिया, उसको संभाल के बैठे रहना, ये बात नहीं चलती है। उसमें जो श्रेष्ठ है, उसको आगे लें, जो नया श्रेष्ठ आगे जोड़ सकते हैं, जोड़ते चलें और उस दिशा में हमारा प्रयास होना चाहिए। ये मुझे बहुत आवश्यक लगता है और उसको हम करें। मुझे विश्वास है कि उस दिशा में भी हम चलेंगे तो आने वाले दिनों में फायदा होगा। एक मेरा मत है जब मैं effective governance की बात करता हूं, good governance की बात करता हूं। देखिए without art good governance is impossible, good governance art के बिना चल नहीं सकती और जब मैं art कहता हूं। A for accountability, R for responsibility, T for transparency, A, R, T, ये art चाहिए, good governance के लिए बिना art जीवन भी संभव नहीं होता।

बिना art जीवन भी संभव नहीं होता तो बिना art Governance भी संभव नहीं होता और इसलिए मैं चाहूंगा कि उस बात को हम करें। कभी-कभार जब हम काम करते हैं इतनी समस्याएं होती हैं इतनी चीजें देखते हैं तो हमारे मन में विचार आता है ज्यादातर लोगों को आता है, अकेला हूं, क्या करूं, कैसे होगा? दोस्तों आप अकेले नहीं हैं। आप विश्वास कीजिए आप कभी भी अकेले नहीं हैं। दुनिया में कोई कभी अकेला नहीं होता है। Plus one होता ही होता है, जो परमात्मा में विश्वास करता है उसके साथ परमात्मा होता है, जो प्रकृति में विश्वास करता है उसके साथ प्रकृति होती है। विज्ञान में विश्वास करता है, उसके साथ विज्ञान होता है, जो ज्ञान में विश्वास करता हूं उसके साथ ज्ञान होता है। हम हमेशा Plus one होते हैं। जब हम जीवनभर यह सोचते रहेंगे कि मैं अकेला नहीं हूं Plus One हूं। आपको कभी अकेलापन महसूस नहीं होगा। कभी-कभार यह लगता है। कभी-कभी कुछ लोग ऐसे भी होते हैं। जिनके दिमाग में यही चलता है मेरा क्या। Promotion, ठिकना, फलाना.. में और कोई चीज नहीं कह रहा हूं, वो जमाना चला गया। लेकिन मेरा क्या और अगर वो नहीं मिल बैठा तो मुझे क्या। सारा खेल इन दो शब्दों में चलता है। शुरू हुआ तो मेरा क्या, नहीं हुआ तो मुझे क्या। करो, तुम्हारा काम जाने, भगवान जाने मैं समझता हूं हम देश की सेवा के उस जगह पर बैठे हैं, जिसमें मेरा क्या और मुझे क्या यह नहीं होता है। हमारा तो यही सपना होता है कि सवा सौ करोड़ देशवासियों की सेवा के लिए ईश्वर ने मुझे एक ऐसा अवसर दिया है। ऐसा अवसर दिया है कि मैं कुछ कर छोड़कर जाऊं।

आप भी देखिए जी, मुझे याद है मेरा एक शौक था सीखना जानना, समझना। मैं जब अफसरों से बात करता था, तो वो कभी मुझे बताते थे कि साहब अपने राज्य में sixty में, वो फलाने Chief secretary थे न, ऐसा करके गए थे और उनके साथ काम करते थे तो ऐसा होता था। Junior bureaucracy, senior bureaucracy के संबंध में इतना गौरव करती है जी, इतनी चीजों को याद करती है। यह अपने आप में बहुत बड़ी institution है जी। हम इसको कम न आंके। आप भी देखिए कि आज हम वो कर रहे हैं कि हमारे पीछे जो junior पीढ़ी है वो कभी कहे कि भई उस समय मैं तो नया था

लेकिन हमारे जो पुराने अफसर थे, उन्होंने एक नया बदलाव लिया और आज जो देख रहे हैं न आप यह बदलाव उन्होंने जमाने में यह फाइल है देख लेना, उन्होंने शुरू किया। साहब देश राजनेताओं से नहीं चला है। देश बनाने के लिए, चलाने के लिए सैकड़ों प्रकार के लोगों ने हजारों प्रकार के काम किए हैं। तब देश चला है और उसमें अहम भूमिका करने का अवसर आपके पास आया है।

आप जब निवृत्त होंगे तब कहेंगे कि मैंने आठ Chief Minister देख लिए थे, मैंने 10 Chief Minister देख लिए थे। लेकिन कोई Chief Minister यह नहीं कह पाएगा कि मैंने इतना को देख लिया था। आपके पास यह ताकत है। हम तो अस्थिर हैं, आप स्थिर हैं। आप कितनी सेवा कर सकते हैं, इसका आप अंदाज कर सकते हैं। और जब मन में कभी यह आए इतना काम है, मैं क्या करूँ, मेरे अकेले के करने से क्या होगा। मैं मानता हूँ इस बात को मन में मत लाइये। एक बार समुद्र तट पर एक बच्चा जा रहा था। समुद्र में लहरे आने के कारण मछलियाँ निकलकर के एकदम से बाहर आ गई एकदम से। हजारों की तादाद में मछलियाँ बिना पानी के झटपटा रही थी। तो उस बच्चे ने मछली को उठाकर के पानी में डाल दिया। एक डाला, दो डाला, तीन डाला। तो कोई सज्जन जा रहे थे, उन्होंने उस बच्चे को कहा कि भई तू पागल है हजारों मछलियाँ पानी के बाहर तड़प रही हैं, तू यह एक दो को डालोगे क्या निकलेगा, क्या करोगे, क्या होगा इससे? उसने बड़ा अच्छा जवाब दिया।

उसने बड़ा अच्छा जवाब दिया उस बच्चे ने, उस अनुभवी व्यक्ति को जवाब दिया, मैं सहमत हूँ, कोई फर्क नहीं पड़ेगा, ये हजारों मछलियों की जिंदगी में कोई फर्क नहीं पड़ेगा, मेरी जिंदगी में भी कोई फर्क नहीं पड़ेगा, आपकी जिंदगी में भी। लेकिन जिन तीन मछलियों को मैंने वापस डाला है, उनकी जिंदगी में जरूर फर्क पड़ेगा। ये संतोष होता है इसलिए कभी ये न सोचा कि इतने बड़े में क्या होगा, ये तीन को भी मैंने बचा लिया न तो भी बहुत बात होता है। कोई घास की बड़ी गंजी में आग लग जाए तो बुद्धिमान व्यक्ति क्या करता है। गंजी बोलते हैं, वो घास का ढेर होता है, उसको क्या बोलते हैं, घास को बहुत बड़ा, जो भी मुझे भी शब्द मालूम नहीं है। गुजराती में तो उसको बहुत बड़ा गंजी कहते हैं, घास का ढेर लगा, मानो उसमें आग लग गई तो क्या करेंगे, तो उसमें पानी डालने से घास बचेगा क्या, पानी डालने से उतना ही नुकसान होने वाला है, जितना आग लगने से होने वाला है। करें क्या, कोई मिट्टी डाले, उससे काम होगा क्या, समझदार आदमी क्या करेगा घास के ढेर में से जितना घास खींचकर के ले जा सकता है, ले जाएगा। जितना बच सकता है, बच गया। दोस्तों चारों तरफ आग लगी हुई है तो भी रास्ता है, कुछ तो नया निकालकर के कर सकते हैं, हम कुछ तो बचा सकते हैं, निराशा के माहौल में भी, निराशा के माहौल में भी इस भाव को मन में संजोकर के काम करें, हम भी परिस्थितियों को पलट सकते हैं, परिस्थितियाँ पलटी जा सकती हैं और इसलिए मैं कहता हूँ दोस्तों कि हम अपने जीवन में इन बातों की ओर अगर ध्यान देंगे तो कभी काम का बोझ नहीं लगेगा, संकटों की विराटता नहीं लगेगी और दूसरी बात है administrative reform की एक ताकत होती है, जो संकटों से सीखता है। जो संकटों से सीखता नहीं है और मैं मानता हूँ हर आपत्ति एक अवसर होती है और आपत्ति में से अवसर खोज नहीं पाता है वो सबसे ज्यादा नुकसान मोलता है, सबसे ज्यादा घाटा मोलता है। समझदार व्यक्ति का काम है, वो आपत्ति से सीखे।

मैं अभी कनाडा गया था तो कनाडा के प्रधानमंत्री से गप्पे मार रहा था, तो उनकी पार्लियामेंट देखने गया था तो ऐसी ही मैंने पूछा, आपके यहां आतंकवादियों का हमला हुआ तो, तो उन्होंने बड़ा मजेदार कहा बोले खैर संकट तो बड़ा था, नुकसान हुआ लेकिन हम उसमें से भी सीखे तो मैं जागरूक हो गया। मैंने कहा क्या सीखे, बोले हमारे यहां lower house-upper house, building एक ही है लेकिन दोनों की security अलग-अलग है तो हम बोले पिछले 15 साल से सब सरकार कोशिश करती थी कि lower house-upper house की security arrangement single हो जाए। लेकिन वो हम नहीं कर पाते थे, ये संकट के कारण हो गई तो मुझे तुरंत फड़की मेरे देश में वो ही हाल है। Parliament पर हमला हुआ, हमने मौका खो दिया। आज भी हमारे यहां राज्यसभा की security अलग है, लोकसभा की security अलग है। मैं आलोचना करने के लिए नहीं कह रहा हूँ, मैं ये कह रहा हूँ कि आपत्तियाँ भी खोनी नहीं चाहिए कभी। आपत्तियों से भी अमृत निकाला जा सकता है, ये हमारा स्वभाव होना चाहिए तभी जाकर reform होता है जी, तभी जाकर के reform होता है और मैं मानता हूँ कि ये अगर व्यवस्था की ताकत बनेगी तो मैं मानता हूँ कि ये बहुत बड़ा बदलाव होगा।

कुछ दो बातें-तीन बातें करके मैं अपनी बात को समाप्त कर दूंगा। कभी-कभार हम स्वयं अपने लिए भी विकास की यात्रा की ओर बल देना चाहिए। मसूरी में जो हमने पढ़ लिया, तो देश उसी पर चलता रहेगा तो संभव नहीं होगा जी, वक्त बदल चुका है। हमें perfection की ओर जाना पड़ेगा, हमें capacity building की ओर जाना पड़ेगा। मैं एक समस्या देख रहा हूँ। हमारे देश के सामने, हम लोगों को आदत रही है scarcity में काम करने की मूलतः आज जो 30 साल जिसने सर्विस की होगी, वो जिंदगी में सर्वाधिक समय scarcity में काम किया होगा। पैसे की crunch होगी, तकलीफें होंगी, हर मुसीबत के बीच बेचारे ने चलने की कोशिश की होगी और इसके कारण विपुलता में काम करने की आदत ही नहीं बन पाई और भारत के लिए सबसे बड़ी मुसीबत आने वाली है कि विपुलता में काम कैसे करना है, resource बढ़ने वाले हैं जी, आर्थिक स्थिति सुधरने वाली है।

आर्थिक स्थिति सुधरने वाली है, लेकिन अगर capacity building नहीं होगा within good तो हम इन रुपयों का सही समय सही उपयोग भी नहीं पाएंगे। हमारे सामने एक बहुत बड़ी चुनौती है कि जब हम scarcity से plenty की तरफ जा रहे हैं उस कालखंड में हमें अपने आप को सजग करना होगा। आज भी आप किसी Urban Body को पैसे दीजिए, Urban Body को कहो कि reform करो, उसके पास Manpower ही नहीं है। आपने देखा होगा कि हमारे देश में urban body जो कि सबसे ज्यादा काम Technical है रोड बनाना, गटर बनानी है, engineering work है लेकिन maximum staff clerical होता है, क्योंकि जो body चुनकर के आती है उनको लगता है कि चलो 50 रिश्तेदारों को भर दो, तो clerk भर देते हैं। और परिणाम यह होता है कि जो Quality Manpower चाहिए वो नहीं होता है। Quality Manpower नहीं तो हम क्या करते हैं फिर ज्यादातर सरकार में consultancy क्यों घुस गई। capacity building का अभाव था, consultancy घुस गई।

NGO को काम क्यों देना पड़ रहा है। हमारी Last Man तक जो delivery करने का mechanism का काम करना चाहिए था वो big हो गया, NGO को दे दो यार कर लेगा वो Toilet बना देगा। मैं समझता हूँ जब plenty की तरफ जा रहे हैं तब capacity building हमारी सबसे बड़ी challenge है।

आज जब Civil Services Day मना रहे हैं तब यहां बड़ी महत्वपूर्ण विषयों की चर्चा हुई है। मैं मानता हूँ कि हमने अपनी capacity building पर बल देना पड़ेगा और इसलिए मैंने कहा कि हम Civil Services Day में youth के पास जाए और नये youth को कैसे लाएं, talented youth को इस सर्विस में कैसे लाएं। Government में काम करना यह गर्व कैसे बने, यह वातावरण फिर से बनाना होगा। और यह बनाने के लिए मैं मानता हूँ हमें इस काम को करना होगा, हमें अपना भी विकास करना होगा। हमने पुराने अपने दायरे, resource को बदलना पड़ेगा। नई चीजों को सीखना पड़ेगा, समझना पड़ेगा। सामान्य नागरिक में भी.. आपने देखा होगा आपको घर में बहुत बढ़िया अगर ले आए आप Video Player आप 50 बार देखते रहेंगे कि भई कैसे चालू हो, लेकिन आपका 4 साल का बच्चा वो बोलेगा कि पापा आपको नहीं आए लाओ मैं कर देता हूँ। वो फट से कर देता है। इतना बड़ा change आया है generation में आपको उसको cope-up करना है और इसलिए हम irrelevant नहीं होने चाहिए। As an individual हमारे लिए आवश्यक है कि हम व्यक्तिगत विकास करते रहे। मनुष्य कोई भी हो, हर मनुष्य के अंदर अच्छी और बुरी चीजें रहती ही, रहती है।

कोई यह कहे कि मेरे में सब गुण ही गुण भरे हैं, तो उससे बड़ा कोई मूर्ख नहीं हो सकता। हरेक के अंदर गुण और अवगुण होते हैं। हमें तय करना है कि भई इतना बड़ा सामाजिक दायित्व मिला है तो मुझे किस रास्ते पर चलना है। एक बार एक पिता सोते समय बेटे को कथा सुना रहा था। वार्ता कहकर सोने की आदत थी बच्चे की। तो उसने दादा जी को कहा कि दादा जी जरा story सुनाइये। तो दादा जी ने wolf की story सुनाई, भेड़िए की। उन्होंने कहा हरेक इंसान के अंदर दो भेड़िए होते हैं, तो बच्चा कहने लगा, मेरे में तो कोई है ही नहीं तो भेड़िया कहाँ होगा अंदर। तो बोले हरेक के अंदर दो भेड़िए होते हैं एक good भेड़िया, एक evil भेड़िया, और दोनों की लड़ाई चलती रहती है। जो evil भेड़िये होते हैं भीतर में इसके अंदर इतनी-इतनी बुराईयां होती हैं। good भेड़िया उसके अंदर इतनी इतनी अच्छाईयां होती हैं। तो बच्चे ने पूछ लिया अच्छा लड़ाई होती है, तो जीता कौन? तो दादा ने जवाब दिया, जिसको तुम ज्यादा पोषण करोगे, न वो जीतेगा। अगर good भेड़िया को पोषण ज्यादा करोगे तो ultimately वो जीतेगा, evil भेड़िया को करोगे तो वो जीतेगा। और इसलिए हम अगर सार्वजनिक जीवन में इतना बड़ा दायित्व लेते हैं। हमारे भीतर, हरेक के अंदर कोई अछूता नहीं है, मैं यहां हूँ, तो मैं भी हूँ जिम्मेवार। मेरे भीतर भी दो भेड़िए लड़ाई लड़ रहे हैं। हम किस भेड़िये को खिला रहे हैं ताकि वो ताकतवर बने। ताकि evil भेड़िया जीत न जाए मेरे भीतर का, इस बात को लेकर के हमें चलना होगा। और उसको मैं मानता हूँ कि हम चलेंगे तो।

हमारी सरकार में silo सबसे बड़ी कठिनाई का कारण है, टीम यह अनिवार्य होती है। बिना टीम के काम नहीं होता है। और Leadership हमारी Quality चाहिए हम टीम कैसे create करें, हम टीम कैसे बनाएं, टीम को कैसे चलाएं। एक अकेला कुछ नहीं कर सकता जी। हर किसी को टीम चाहिए। कृष्ण भगवान को भी गोवर्धन उठाना था तो ... गोवर्धन उठाना था तो उन सारे ग्वालियों की लकड़ी लगानी पड़ी थी, राम को भी सेतु बनाना था तो सब बंदरों की जरूरत लग गई थी, हनुमान जी को भी लगा दिया था। आपको भी, अगर कृष्ण को, राम को भी उसकी जरूरत पड़ी तो मैं और आप कौन होते हैं जी। हमें भी team चाहिए, बिना team हम कुछ नहीं कर सकते हैं और इसलिए team creation उस पर हमारा प्रयास रहना चाहिए। हमारी पांच उंगलियां हैं, चार उंगली और एक अंगूठा है। वे अकेले-अकेले रहेंगे तो क्या होगा, बाँय-बाँय करने के सिवाए किसी काम नहीं आएंगे वो लेकिन वो ही team बनके काम करे तो चाहे वो परिणाम दे सकते हैं कि नहीं दे सकते। अब हमें तय करना है कि हमें बाँय-बाँय करना है कि team work करके ताकत दिखानी है और इसलिए मैं चाहूंगा कि हमें team बनाने की दिशा में जाने चाहिए।

कभी-कभार काम करते-करते निराशा आ जाती है। पता नहीं यार कैसे होगा, दो शब्द-दो शब्द, मैं चर्चा करना चाहूंगा। पता नहीं क्यों कैसे ये शब्द हमारे भीतर घुस गए हैं। एक bureaucratic temperament और दूसरा political interference अब शब्द बाहर से नहीं आए, किसी पत्रकार ने हमारे सिर पर नहीं थोपे हैं। ये हम ही लोगों ने उपयोग किया है। ये हमने अपने ही अंदर, आपने देखा ही होगा। एक department काम कर रहा है, लेकिन कहीं पर रुका हुआ है। उसको पूछोगे क्या हुआ भाई। अरे पता नहीं वहां पर bureaucratic way है, file जल्दी नहीं निकलेगी। यानी हम ही इस system में हैं और एक जगह पर file नहीं निकलती है, तो हम कहते हैं यार उसका bureaucratic way है। उसी प्रकार से कुछ काम अटका है तो जो news leak करने वाले हैं तो यार bureaucratic interference बहुत है।

लोकतंत्र में bureaucratic system और politics का चोली दामन का नाता है, छुटने वाला नहीं है जी, हकीकत है। लोकतंत्र की यही तो विशेषता है, जनप्रतिनिधि आने वाला है, जनप्रतिनिधि फैसले करने वाला है, जनप्रतिनिधियों के लिए आवश्यक है कि अगर देश चलाना है तो लोकतंत्र की सूझ-बूझ के साथ ये आवश्यक है political interference नहीं चाहिए लेकिन political intervention अनिवार्य रूप से चाहिए, वरना लोकशाही नहीं चल सकती है। political intervention is needed वरना जनसामान्य की आवाज को कैसे पहुंचाएंगे। interference तबाह कर सकता है, intervention अनिवार्य होता है।

उसी प्रकार से sportsman में देखा होगा आपने खिलाड़ी हारा तो भी sportsman spirit में गर्व होता है। हम ही लोग हैं bureaucracy यानि क्या शब्द का गाली बना दिए हमने, ये हमारी जिम्मेवारी है कि bureaucratic - bureaucratic यानि सब बेकार है। अटकना, रुकना, अड़ंगे डालना मतलब bureaucratic है, ये परिभाषा लोकतंत्र में अच्छी नहीं है, हमें ही बदलनी होगी और उसके कारण जो अच्छे लोग हैं वो भी नहीं कर पाते हैं। इन दोनों शब्दों ने अपनी ताकत खो दी है। फिर से उसको प्राणवान कैसे बनाया जाए, सामर्थ्यवान कैसे बनाया जाए और शब्दों का अपना एक मूल्य होता है। वो अभिव्यक्ति का एक सबसे बड़ा माध्यम होता है और उसके लिए अगर हम कोशिश करें, मैं समझता हूँ कि हम परिणाम देंगे।

कभी-कभार काम करते-करते निराशा आ जाती है, निराशा आ जाती है एक बार, बहुत साल पहले मैं student age की बात कर रहा हूँ। Reader digest ने competition रखी थी। वो competition बहुत विशेष थी। उसने लोगों को कहा था कि भई आप अपना experience share कीजिए। लेकिन experience सही होना चाहिए। अपनी जिंदगी का सही घटना होनी चाहिए, काल्पनिक नहीं है और उसने एक प्रश्न पूछा था कि सफलता और विफलता के बीच में फासला कितना होता है, distance between success and failure और सही घटनाएं लिखनी थी तो एक सज्जन ने लिखा, reader digest में छपा, बहुत साल हो गए। उसने लिखा कि जय और पराजय के बीच, सफलता और विफलता के बीच तीन फुट का फासला होता है, फिर आगे उसने वर्णन लिखा, उसने कहा मैं एक engineer था। नौकरी की तलाश कर रहा था अमेरिका में कोशिश करता था कुछ काम मिल जाता था। इतने में मैंने अखबार में एक advertisement पढ़ी कि अफ्रीका में सोने की खदानों की नीलामी होने वाली है और उसमें लिखा गया था कि वो खदानें हैं, जिसमें से सोना निकाल दिया गया है, निकालने वाली कंपनियां अपना पूरा करके चली गई हैं, अब यह जो खाली पड़ा है वो हम देने वाले हैं। तो पैसे भी ज्यादा लगाने वाले नहीं थे। तो इसने कहा कि मैंने apply किया, बहुत कम पैसे में मुझे खदान मिल गई। और एक बहुत बड़ी कंपनी वहां सोने निकालने का काम करती थी और आगे देखा कि कुछ निकलता नहीं तो फिर वो चले गए। मुझे लगा कि चलो भई मैं कोशिश करूं, मैंने कोशिश शुरू की, मेरे पास कुछ ज्यादा साधन नहीं थे। सामान्य manual work से मैंने शुरू किया। सिर्फ तीन फुट में नीचे गया और मुझे बहुत बड़ा सोने का भंडार नया मिल गया। और मैं दुनिया का अरबों पति हो गया। मेरे लिए विजय-पराजय, सफलता-विफलता के बीच सिर्फ 3 फीट का फासला है।

मैं मानता हूँ दोस्तों आप भी जिंदगी में इंतजार में सोचकर चलिए, तीन कदम दूर सफलता आपका इंतजार कर रही है, विजय आपका इंतजार कर रहा है। और इसलिए किसी पल यह नहीं सोचिए कि अब क्या, बहुत हो चुका, अब लगता नहीं यह कभी नहीं हो सकता। तीन कदम दूर कोई विजय, कोई सफलता आपकी प्रतीक्षा कर रही है। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि आप अगर इस निष्ठा के साथ खुद पर भरोसा रखकर के जिंदगी को चलाने की कोशिश करोगे आप अवश्य सफल होंगे।

मैं फिर एक बार सरदार पटेल को प्रणाम करते हुए इस महान संस्था को राष्ट्र की आर्थिक एकीकरण, सामाजिक एकीकरण के लिए विकास की नई ऊंचाईयों पर देश को ले जाने के लिए आपको जो अवसर मिला है, आप देश की बहुत बड़ी अमानत हो इस अमानत का उपयोग राष्ट्र के कल्याण के लिए होता रहे।

इसी अपेक्षा के साथ मेरी तरफ से आपको हृदय पूर्वक बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत बहुत बधाई।

धन्यवाद।

अमित कुमार/ सुरेन्द्र कुमार/ तारा/ मुस्तकीम खान